माध्यमिक स्तरीय छात्राओं में द्रुत ख्याल की रचनात्मक क्षमता के विकास का अध्ययन– सरगम एवं लक्षण गीतों के आधार पर

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड युनिवर्सिटी)
आगरा से संगीत में पी.एच.डी. की उपाधि की
आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध
की रूपरेखा
(2016)

निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) सुधा सहगल
संगीत –विभाग,

शोधार्थिनी

कीर्ति तिवारी
पी.एच.डी. (संगीत गायन)

विभागाध्यक्ष

प्रो. (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सत्संगी
संगीत विभाग, कला संकाय

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालाबाग़, आगरा–282005

”माध्यमिक स्तरीय छात्राओं में द्रुत ख्याल की रचनात्मक क्षमता के विकास का अध्ययन– सरगम एवं लक्षण गीतों के आधार पर“

भूमिका

द्रुत ख्याल की प्रासंगिकता शास्त्रीय संगीत जगत में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। किसी भी राग को सीखने के लिए प्रायः द्रुत ख्याल का शिक्षण किया जाता है किन्तु गुरुकुल पद्धति या घराना पद्धति में द्रुत ख्याल का शिक्षण करने से पूर्व सरगम गीत एवं लक्षण गहतरें कर शिक्षण करने से पूर्व सरगम गीत एवं लक्षण गीतों का शिक्षण सिद्धान्तिक रूप से अनिवार्य था जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी द्रुत ख्याल को न केवल सरलता से सीखता था अपितु द्रुत ख्याल की रचना करने में भी प्रयत्न करने लगता था।

वर्तमान में संगीत का शिक्षण विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में जिस पद्धति के अन्तर्गत हो रहा है उस पद्धति में सरगम गीत एवं लक्षण गीतों का शिक्षण अत्यन्त अल्प होता जा रहा है जिसके कारण एक राग के विस्तृत क्षेत्र को सिखना दुष्कर ही है। किसी भी राग को यदि सर्वप्रथम सरगम गीत सिखाकर तत्पश्चात लक्षण गीतों के द्वारा जब द्रुत ख्याल सिखाया जाता था तो वह राग विद्यार्थियों को कंठस्थ हो जाता था तथा राग के वादी, संवादी विशेष स्वर संगतियों को तो सरगम गीत से भली प्रकार जान जाता था तथा लक्षण गीत में पूरे राग का परिचय भी कंठस्थ हो जाता था। इन दोनों शैलियों को सीखने के पश्चात द्रुत ख्याल को सीखना अत्यन्त सरल हो जाता था। किसी भी राग को तीन गायन शैलियों के माध्यम से सीखने पर विद्यार्थी की समझ बूझ का दायरा व्यापक हो जाता था।

वर्तमान में इस प्रकार की शिक्षण पद्धति का अभाव होता जा रहा है अतः माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को भलीभाँति समझने के लिए आवश्यक है कि उन्हें सरगम एवं लक्षण गीतों से परिचित करवाया जाये।

तत्पश्चात् द्रुत ख्याल सिखाया जाये और कुछ समय अवधि के पश्चात् यह परीक्षित किया जाये कि–

- क्या सरगम गीत को विद्यार्थी सरलता से सीख गये है ?
- क्या विद्यार्थियों को सरगम गीत सीखने में किसी कठिनाई का अनुभव हुआ ?
- क्या सरगम गीत में प्रयुक्त स्वर संगतियाँ उन्हें रूचिकर लगती है ?
- क्या लक्षण गीत के द्वारा राग को समझने में सरलता होती है ?
- क्या राग के परिचय को सरलता से कंठस्थ कर लेते है ?
- सरगम गीत एवं लक्षण गीत को सीखने के फलस्वरूप क्या द्रुत ख्याल को सीखने में सरलता या शीर्घता का अनुभव करते है ?
- क्या विद्यार्थी द्रुत ख्याल को विभिन्न तालों में सीखने के लिए रूचि लेते है ?
- तीन गायन शैलियों को सीखने के पश्चात् क्या विभिन्न स्वर संगतियों के द्वारा कुछ रचनात्मक कार्य करते है ?
- क्या सरगम गीत एवं लक्षण गीत के आधार पर वे द्रुत ख्याल की रचना करने में समर्थ हो सकते है ?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु, विद्यार्थियों में रचनात्मक क्षमता को जानने के लिए, सरगम एवं लक्षण गीतों की प्रांसगिकता को प्रकाश में लाने के लिए प्रस्तावित शोध को चयनित किया गया है। यह एक मौलिक कार्य है तथा इस विषय पर कहीं भी कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ। ख्याल को दृष्टिगत करते हुए तो अनेक पुस्तके, शोध पत्र, पत्रिकाओं में लेख उपलब्ध है किन्तु सरगम गीतों एवं लक्षण गीतों पर सामग्री का नितान्त अभाव है। यह भी आश्चर्य है कि सरगम एवं लक्षण गीतों के परिप्रेक्ष्य में ख्याल गायन पर न तो सोचा गया और न ही किसी पुस्तक एवं शोध पत्र का उल्लेख हुआ।

ख्याल गायन पर अग्रलिखित कतिपय शोध प्रबन्ध, शोध पत्र एवं पुस्तकें प्राप्त होती है–

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

शोध प्रबन्ध	लेखक	वर्ष
1. ख्याल गायन में आगरा घराने की परम्परा (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)	सिंह, अमरिक	1995
2. उत्तर भारतीय संगीत में घराने में गायकी का महत्व (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)	डॉ. वालिया, अमृत	1992
3. ख्याल गायन बंदिश का स्वरूप एवम् महत्व (हिमाचल विश्वविद्यालय)	शर्मा, सुरेश	1990
4. ख्याल गायन शैली में घराने की परम्परा एक अध्ययन	गुलाटी, संगीता	1998
5. उत्तरीय भारतीय ख्याल गायन पद्धति एवम् श्री खण्डे, सुरेश गोपाल वर्तमान शिक्ष प्रणाली (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)	सुरेश, गोपाल	1989
6. Evaluation of Ragas through their Distinetive treatment of different khyaal gharanas (Delhi University)	डॉ. बैनर्जी शरबरी	1997
7. Origins and enslution in Musical Compositions (khyaal) with ref. to regional (Delhi University)	डॉ. चक्रवर्ती, कृष्णा	1965
8. Development of Hindustani Classical Music during 19th and 20th C (Delhi University)	डॉ. सोनी, रमा	1984

शोध पत्र

1. Khyaal Tradition of Rajasthan, Singh Ranveer 2000

2. Khyaal: its origin and development, Roy, Bimal

3. ख्याल गायन शैली, कुलकर्णी, डॉ. सौ. वर्षा, जून, 2010

4. ख्याल का विकास, सिंह, डॉ. जयदेव, अक्टूबर, 1988

5. ख्याल गायन शैली में बोलों, हलदणकर, श्री ववन राव, दिसम्बर, 1999

6. ख्याल गायन शैली एक विचारणीय प्रश्न, डॉ. जयचन्द्र, मार्च, 1990

पुस्तकें

1. संगीत मीमांसा, पुरी, डॉ. मृदुला, सत्यम पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2007

2. संगीत चिन्तामणि, बृहस्पति, आचार्य, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ०प्र० 2001

3. मध्य प्रदेश में शास्त्रीय संगीत, डॉ. कलाश्री, निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली, 1995

4. हिन्दुस्तानी संगीत के महान, गोस्वामी, शैलेन्द्र कुमार, रचनाकार, सदारंग–अदारंग कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स नई दिल्ली 2001

उपरोक्त शोध प्रबन्ध पुस्तकों शोध पत्रों में ख्याल विषयक जानकारी तो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है किन्तु आश्चर्य का विषय है कि सरगम गीत व लक्षण गीतों के संदर्भ में कोई शोध प्रबन्ध, पुस्तकें तथा शोध प्रपत्रों का नितान्त अभाव है। जो सम्बन्धित साहित्य उपलब्ध है वह इतना नगण्य एवं सार्थक नहीं है जो प्रस्तावित शोध प्रबन्ध हेतु लाभप्रद हो सके।

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध को ख्याल गायन, सरगम गीत व लक्षण गीतों के सामंजस्यात्मक रूप में तथा इनमें निहित विशिष्ट तत्वों के क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक स्वरूपों को खोजने, निरीक्षण करने तथा विभिन्न परम्पराओं की रचनात्मक क्षमताओं को उजागर करने की दृष्टि से चयनित किया गया है–

विषय कथन

(माध्यमिक स्तरीय छात्राओं में द्रुत ख्याल की रचनात्मक क्षमता के विकास का अध्ययन) (सरगम एवं लक्षण गीतों के आधार पर)

प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

(1) द्रुत– शीघ्रता युक्त, भागा हुआ, तीव्र गतिवाला, जो द्रव हो गया हो, द्रवीभूत गला या पिघला हुआ, तेज। ताल की एक मात्रा का आधा, मध्यम से कुछ तेज लय। गति वि.तीव्र गति वाला। स्त्रीः तीव्र गति, तेज चाल। गाामी (मिन्) वि.तीव्र गति से चलनेवाला। पद पु. वि. तेज चलने वाला। मध्या स्त्री एक अर्द्धसम वर्णवृत्ता विलंबित पुः एक वर्णवृत।

–मनक विशाल हिन्दी शब्द कोश–सूर्य नारायण उपाध्याया।

❖ तेजलय, जलद, पाठ्य का अलंकार स्थाय, द्रुत गति में स्तरों का उच्चारण होने पर द्रुत सम्बन्धी स्थाय होते है। ख्याल में तान में अथवा टप्पे की गायन शैली में इसे देखा जा सकता है।

–संगीतार्णव (संगीत कोश)–डॉ. सुनन्दा पाठक।

(2) ख्याल– एक विशेष गान पद्धति, ख्याल विचार

–मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश–सूर्य नारायण उपाध्याय

❖ ध्यान, स्मरण, चिन्ता, विचार, एक शास्त्रीय रोग, खेल ढंग

–बृजभाषा शब्द कोश–डॉ. सुधीर कुमार

❖ ध्यान, मनोवृत्ति, विचार, भाव, आदर, सम्मति, एक प्रकार का गान, याद स्मृति ख्याल

–भाषा शब्द कोश–डॉ. राम शरण शुक्ल रसाल

❖ एक प्रकार की गायन शैली

–संगीतार्णव संगीता कोश–डॉ. सुनन्दा पाठक

(3) **सरगमगीत –**संगीत के षड्ज से निषाद तक के स्वरों के आरोह–अवरोह का क्रम (संगीत) स्वर ग्रामः राग में लगने वाले स्वरों का उच्चारण।

–मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश–सूर्य नारायण उपाध्याय।

❖ जब किसी राग के स्वरों को किसी ताल में तालबद्ध रचना द्वारा राग का स्वरूप स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो उसे स्वर मालिका या सरगम गीत कहते है।

– संगीत स्वरित–डॉ. रमाकान्त द्विवेदी।

(4) **लक्षण गीत** – कोई गीत, जब किसी राग में गाया गया हो और उस गीत के शब्दों में राग के लक्षणों जैसे वादी, संवादी, था गायन समय का वर्णन हो, तो उसे लक्षणगीत कहते है।

–संगीतार्णव (संगीत कोश)–डॉ. सुनन्द्रा पाठक

❖ अंग चिह्न, अवलोकन, चरित्र, प्रतीक, प्रेक्षण, लक्षण, शकुन

– समांतर कोश, अरविंद कुमार, कुसुम कुमार

❖ जिस गीत बंदिश में राग के लक्षणों का वर्णन हो अर्थात् राग के गाने का समय, राग के विकृत स्वर, राग की पकड़, वादी, सम्वादी जाति एवं राग की प्रकृति अदि विषयगत वर्णन हो ऐसे गीत को लक्षण गीत कहते है।

– संगीत स्वरित–डॉ०रमाकान्त द्विवेदी

(5) क्षमता– सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता।

–मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश–सूर्य नारायण उपाध्याय

❖ उर्जा, क्षमता,धारण क्षमता भार वहन क्षमता योग्यता।

– समांतर कोश–अरविंद कुमार कुसुम कुमार

(6) रचना – बनाने की क्रिया, निर्माण, निर्माणी की प्रक्रिया, उत्पादन, नवसृष्टि, कौशल, निर्मित वस्तु (घर, मूर्ति, ग्रंथ आदि), सृष्टि, विन्यास, सँवारना (बाल, वेश आदि, गूँथना, सिरजना, निर्माण करना, निश्चित करना, उत्पन्न करना, ग्रंथ आदि लिखना, व्यूह रचना, कल्पना करना, काल्पनिक सृष्टि करना, श्रृंगार करना, सजाना)।

– मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश–सूर्य नारायण उपाध्याय

❖ 'बनाट', 'सजावट', 'देखत', 'रूचिर वेष कै रचना'। कलात्मक निर्माण।

– तुलसी शब्द कोश– आचार्य बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान'

(7) माध्यमिक – सबका बीच का, किसी चीज का भीतरी भाग।

–मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश–सूर्य नारायण उपाध्याय।

❖ मध्यम, मध्यम राशीय, मध्यम स्तरीय, मध्यवर्ती

–समांतर कोश–अरविंद कुमार, कुसुम कुमार

❖ विद्यालयी स्तर पर इन्टर स्तर हेतु मान्य

प्रस्तावित शोध का महत्व

प्रस्तावित शोध का महत्व इसमें निहित सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक पक्षों को प्रयास में लाये जाने पर आधारित होगा क्योंकि किसी भी शोध प्रबन्ध एवं पुस्तकों का प्रकाशन इस दिशा में नहीं हुआ है। अतः यह शोध प्रबन्ध एक नवीन दिशा को प्रतिपादित करने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का महत्व शिक्षण संस्थाओं, शोधकर्त्ताओं द्वारा विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य करेगा, जिससे सरगम गीत, लक्षण गीत एवं द्रुत ख्याल की प्रासंगिकता सिद्ध होगी। प्रस्तावित शोध प्रबन्ध विभिन्न क्रियात्मक एवं सौन्दर्यात्मक पक्षों को भी ज्ञानवर्धन हेतु सिद्ध होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सरगम गीत के ऐतिहासिक पक्षों को खोजना।
2. लक्षण गीत के ऐतिहासिक पक्षों को खोजना।
3. द्रुत ख्याल के ऐतिहासिक पक्षों को खोजना।
4. विभिन्न घरानों के सरगम एवं लक्षण गीतों को खोजना।
5. माध्यमिक स्तर की छात्राओं में सरगम गीत एवं लक्षण गीतों के सीखने की क्षमता को परीक्षित करना।
6. माध्यमिक स्तर की छात्राओं में सरगम गीत एवं लक्षण गीतों के सीखने की क्षमता को परीक्षित करना।
7. माध्यमिक स्तर की छात्राओं को विभिन्न ताल निबद्ध सरगम एवं लक्षण गीत सिखाकर उनकी सीखने की क्षमता को देखना।

8. माध्यमिक स्तर की छात्राओं को द्रुत ख्याल की रचना हेतु साहित्य देकर बंदिश के रूप में रचना करवाकर परीक्षित करना।

9. सौन्दर्यपूर्ण कारकों जैसे– कण मुर्की, मींड इत्यादि का प्रयोग भी द्रुत ख्याल की रचना में परीक्षित करना।

10. विभिन्न सरगम, लक्षण एवं द्रुत ख्याल का संकलन करना।

11. विभिन्न रागों में सरगम, लक्षण एवं द्रुत ख्याल को स्वरचित स्वरलिपिबद्ध करना तथा माध्यमिक स्तर की छात्राओं द्वारा द्रुत ख्याल को स्वरलिपिबद्ध करवाना।

परिसीमांकन

कार्य एवं समय सीमा को देखते हुए शोध प्रबन्ध को केवल माध्यमिक स्तर के रागों को चार तालों जैसे– तीनताल, रूपक ताल, झपताल, एकताल में ही रचनाशीलता हेतु परिसीमित कर दिया जाएगा।

कार्य विधि एवं उपकरण

शोध हेतु प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा जो दो माध्यमिक स्तर के विद्यालयों पर केन्द्रित होगा तथा नियंत्रित समूहों को Pre Test, Mid Test तथा Post Test के द्वारा परीक्षित किया जाएगा। शोध का अध्ययन कार्य उपलब्ध पुस्तकों, पुस्तकालयों, पत्र–पत्रिकाओं, कलाकारों व विद्वानों से विचार–विमर्श के माध्यम से प्राप्त जानकारी, टेपरिकार्डर, कैसेट्स, सी.डी. हवन्यांकन सामग्री आदि जैसे उपकरणों की सहायता से पूर्ण किया जायेगा।

शोध प्रबन्ध के अध्यायों का प्रस्तावित विभाजन

प्रथम अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

द्वितीय अध्याय

(i) सरगम गीतों की ऐतिहासिकता

(ii) लक्षण गीतों की ऐतिहासिकता

(iii) ख्याल की ऐतिहासिकता

तृतीय अध्याय

(i) माध्यमिक स्तर के पाठयक्रम में निर्धारित रागों का परिचय

(ii) विभिन्न घरानों के सरगम गीत, लक्षण गीत एवं द्रुत ख्याल

चतुर्थ अध्याय

शोधार्थिनी द्वारा स्वरचित–

(i) सरगम गीत

(ii) लक्षण गीत

(iii) द्रुत ख्याल

पंचम अध्याय

माध्यमिक स्तर की छात्राओं द्वारा रचित –

(i) सरगम गीत

(ii) लक्षण गीत

(iii) द्रुत ख्याल

(iv) माध्यमिक स्तर की छात्राओं द्वारा रचित द्रुत ख्यालन का विश्लेषण

षष्ठम् अध्याय

विभिन्न घरानों के सरगम गीत, लक्षण गीत एवं द्रुत ख्याल की रचनाओं का संकलन

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र, रमेश, दिल्ली घराने में संगीत का योगदान, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011

2. बम्बन, डॉ. महेन्द्र प्रसाद, अवनद्य वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा, अभिषेक पब्लिकेशन्स चडीगढ़, 2008

3. पाठक सुनन्दा, हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, जनवरी, 1989

4. डॉ. टाक सिंह तेज, सुबोध संगीत शास्त्र, बेकरा, आलमी फाउन्डेशन, सन् 2005

5. मिश्रा, डॉ. अरुण उत्तर भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रब्यूर्टर, नई दिल्ली 2002

6. उपाध्याय, सूर्यनारायण, मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश, कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2005

पत्र–पत्रिकायें

1. संगीत कला बिहार, जनवरी 2013 डॉ. जयदेव सिंह, ख्याल और उसका निकास

2. संगीत कला बिहार, सितम्बर 2011